प्रथम अध्याय

तुलसी की जीवनी
एवं
साहित्य कृतियों का परिचय

प्रथम अध्याय

तुलसी की जीवनी एवं साहित्य कृतियों का परिचय

गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी साहित्य के अमूल्य रत्न हैं। तुलसीदास केवल हिन्दी के ही नहीं समस्त भारतीय साहित्य में सब से महत्वपूर्ण कवि माने गये हैं। हमारे भारत की महान सांस्कृतिक सम्पदा और समृध्द भूमि पर महाकवि तुलसीदास एक तेजोमयी ज्योति के समान हैं। तुलसी ने अपनी ज्योतिर्मयी वाणी ने भारत के अंध:कार पूर्ण जीवन को पवित्र, लोकमंगल और प्रकाशित किया है। ऐसी वाणी का घोष कराडों हृदयों से निनादित हो रहा है। इसलिए वे सर्वाधिक लोकप्रिय कवि बन गये हैं।

तुलसीदास मूलत: भक्त थे लेकिन अपनी काव्य की ऊँचाई के कारण वे भारत के ही नहीं अपितु विश्व के कवि सिध्द हो गये हैं।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तुलसीदास के बारे में लिखते हैं कि - " तुलसीदास कवि थे, भक्त थे, पण्डित थे, सुधारक थे, लोकनायक थे और भविष्य द्रष्टा थे। "[१]

डॉ. भगवती प्रसाद सिंह तुलसी के व्यक्तित्व के विषय में लिखते हैं - " ये मध्ययुगीन भारतीय काव्याकाश के उज्ज्वलतम नक्षत्र हैं। तुलसीकृत रामायण भारत वर्ष की अपार जनता के शिक्षित एवं अशिक्षित वर्गों के आचार का मूलाधार है। "[२]

गोस्वामी तुलसीदास हमारे भारतीय समाज के महात्मा है, महात्मा हम उसे कहते हैं जिनकी आत्मा महान है। इसके बारे में रामदास गौड कहते हैं - " गोस्वामी तुलसीदास आदर्श महात्मा हैं, व्युत्पन्न अनुभवी और

प्रतिभा सम्पन्न महाकवि हैं और सारे विश्व को मानने वाले राम के अनन्य भक्त हैं और अपने समय के युगान्तर उत्पन्न करनेवाले सुधारक और एकता प्रवर्तक हैं।[३]

जीवनी -

हिंदी साहित्य गगन के परम प्रकाशमय नक्षत्र तुलसी का जीवन-वृत्त अभी तक अन्धःकारमय है। वैसे देखा जाय तो भारतीय महापुरुषों के जीवन-चरित के सम्बन्ध में हमें बडी गडबडी देखने को मिलती है। उनके लौकिक जीवन की सूचना देनेवाली निश्चित घटनाओं और तिथियों का उल्लेख बहुत कम मिलता है। वे अपने सम्बन्ध में मूक रहते हुये बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय कार्य करते रहे।

जन्मतिथि -

तुलसीदासजी की जन्मतिथि के सम्बन्ध में आलोचकों में बहुत मतभेद मिलते हैं।

क) `मानस-मयंक` के रचयिता शिवलाल पाठक ने तुलसी की जन्मतिथि सं. १५५४ मानी है।[४]

ख) `मूल गोसाईं-चरित` लिखनेवाले बाबा वेणीमाधवदास ने भी उनकी जन्मतिथि सं. १५५४ मानी है।[५]

ग) शिवसिंह सरोज ने सं. १५८३ मानी है।

घ) पंडित रामगुलाम द्विवेदी ने सं. १५८९ मानी है।[६]

च) डॉ. ग्रियर्सन ने सं. १५८९ भाद्रपद ११ मंगलवार मानी है।

छ) डॉ. माता प्रसाद ने भी सं. १५८९ मानी है।[७]

ज) डॉ. राजाराम रस्तोगी ने समी के आधार पर सं. १५८९ तिथि को ग्राह्य माना है।[८]

इन सभी के आधार पर हम यह अनुमान निकालते हैं कि सं. १५८९ यह तिथि तुलसीदास की जन्मतिथि है ।

जन्मस्थान -

गोस्वामी तुलसीदासजी के जन्मस्थान के संबंध में भी विद्वानों में मतभेद है । इनके पाँच जन्मस्थान मान लिये है - हाजीपुर, हस्तिनापुर, और तारी । राजापुर और सोरो को जन्मस्थान माननेवाले बहुत विद्वान मिलते हैं :

१) रामचन्द्र शुक्ल राजापुर को तुलसी का जन्मस्थान मानते हैं - " १५ वर्ष तक अध्ययन करके गोस्वामीजी फिर अपनी जन्मभूमि राजापुर को लौटे ।"[९]

२) पं. रामबहोरी शुक्ल - " बाँदा प्रान्त के राजापुर गाँव को प्राचीन परम्परा और अन्य प्रमाणों के आधार पर तुलसी की जन्मपुरी मानते हैं ।"[१०]

डॉ. माताप्रसाद गुप्त सोरो को ही तुलसी का जन्मस्थान मानते हैं वे कहते हैं - " सोरो जाकर मुझे निश्चय हो गया है कि तुलसी का जन्म स्थान सोरो ही है ।"[११]

डॉ. राजाराम रस्तोगी ने भी " सोरो को ही तुलसी का जन्मस्थान माना है ।"[१२]

इसप्रकार हम सोरो को ही प्रामाणिक स्थान मान सकते हैं जहाँ तुलसी जन्मे थे ।

तुलसी का नाम -

तुलसी का बचपन का नाम ` रामबोला ` था । उनका यह नाम हमें ` विनयपत्रिका ` में देखने को मिलता है -

` राम को गुलाम नाम रामबोला सख्यो राम ।
काम यहै नाम द्वै हौं ब कबहुँ कहत हौं ।।`[१३]

तुलसीदास की रचना ओं में रामबोला के बाद तुलसीदास इस नाम का उल्लेख मिलता है -

` केहि गिनती मँह गिनती जस वन घास ।
नाम जपत भये तुलसी तुलसीदास ।।`[१४]

सारांश यह है कि रामबोला ही बाद में तुलसी या तुलसीदास हो गया ।

तुलसी के माता-पिता -

तुलसीजी की माता का नाम हुलसी बताया जाता है । ` मानस ` में एक स्थल पर तुलसी की माता का नाम हुलसी मिलता है -

` रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी ।
तुलसीदास हित हिय हुलसी सी ।।`[१५]

इसप्रकार ` मानस ` के आधार पर तुलसीदासजी को हुलसी का पुत्र मान लेना असंगत नहीं होगा ।

तुलसीजी के पिता का नाम आत्माराम है ।

अत: तुलसीदासजी की माता हुलसी और पिता आत्माराम है ।

तुलसीदासजी की जाति, गुरू और पत्नी -

गोस्वामी तुलसीदास को सरयूपारीण मानते हैं क्योंकि तुलसीदास `कवितावली` में स्पष्ट कहते हैं - `जायो कुल मंगन` अर्थात उनका जन्म उस परिवार में हुआ था जो भिक्षाटन करता था। इसलिए उनको सरयू-पारीण मानना चाहिए। मांगना और खाना आज तक ब्राह्मणों की परिपाटी रही है। अत: तुलसीदास एक दरिद्र ब्राह्मण कुल के होंगे यह निस्सन्देह सत्य है।

तुलसीदासजी के गुरू अनेक विद्वानोंने अनेक माने हैं लेकिन नरहरिदास ही उनके गुरू हैं। मानस के बालकाण्ड में तुलसी अपने गुरू को प्रणाम करके ग्रन्थ आरम्भ करते हैं -

`बन्दौं गुरुपद कंज कृपासिंधु नर रूप हरि।`[१६]

तुलसीदासजी की पत्नी का नाम रत्नावली था। वह दीन बन्धु पाठक की पुत्री थी।

तुलसीदासजी की मृत्यु -

तुलसीजी संवत १६८० वि. में इस संसार से विदा हो गये थे। इनकी मृत्यु के बारे में वेणीमाधव दासजी ने लिखा है -

`संवत सोरह से असी गंग के तीर`
`सावन शुक्ला सप्तमी तुलसी तज्यो शरीर।।`[१७]

अत: संवत १६८० गोस्वामीजी की निधन तिथि माननी चाहिए।

तुलसी का व्यक्तित्व -

वैसे देखा जाय तो कवि-व्यक्तित्व युग परिवेश से निर्मित होता है। कवि-व्यक्तित्व की निर्मिति में उस युग की विचारधाराओं एवं परिस्थितियों का योगदान महत्वपूर्ण रहता है। व्यक्ति अपनी बुध्दि शक्ति के द्वारा समाज और प्रकृति से बहुत कुछ ग्रहण करता है और परिस्थिति के अनुसार उसकी विचारधारा में परिवर्तन होता रहता है। तुलसी का व्यक्तित्व भी इन बातों से अछूता नहीं है।

तुलसीदासजी के जन्म से ही देखेंगे तो उनके माता-पिता को पुत्र जन्म से प्रसन्नता के स्थानपर परिताप ही हुआ था और इसका कारण चाहे यह हो सकता है कि तुलसी का जन्म मूल नक्षत्र में हुआ था या यह कि उनके घर की दशा इतनी बुरी थी कि तुलसी उनको एक बोझा के समान प्रतीत हुए हों। इसप्रकार तुलसी को जन्म से ही ठुकरा दिया गया था। इस तिरस्कार के कारण तुलसीदास को बहुत छोटी आयु में स्वावलम्बी होना पडा। द्वार-द्वार जाकर भीख माँगनी पडी।

इस स्थिति के कारण तुलसीदासजी के व्यक्तित्व में संघर्षशीलता का समावेश बडे सहज ढंग से हो गया है। अपनी दीनता तथा हीनता की प्रतिक्रिया के कारण अपने अस्तित्व की सार्थकता को प्रकट करने की भावना उनमें निर्माण हो गयी।

संघर्ष की प्रेरणा -

इस बढते हुए असंतोष के बीच उन्हें अपने गुरू का आश्रय मिला जिनके श्रीमुख से राम-कथा बार-बार सुनी थी। उन्होंने कहा है -

" मै पुनि निज गुरूसन सुनि कथा सुकरखेत।
समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउ अचेत ।।"[१८]

इस रामकथा को वे बाल्यावस्था में समझ नहीं पाये थे, परन्तु उनके सामने यह कथा बार-बार कही गयी थी। इस मानस कथा को बार-बार सुनने से तुलसी के व्यथित मन को सांत्वना मिली। उन्हें इस संसार के पीछे एक ऐसी शक्ति का आभास मिला जो इन सब दु:ख दर्दों को मिटा सकती है। इससे तुलसी के मन को जो शांति मिली उसकी अनुभूति वे अपने ही समान दु:खी लोगों को कराना चाहते थे। इसलिए उन्होंने उसे ' स्वान्त: सुखाय ' तथा ' जनहिताय ' जन-भाषा में व्यक्त किया। अपने इस दृष्टिकोण को तुलसीदासजी ने स्पष्ट शब्दों मे लिखा है -

' बुध विश्राम सकल जन रंजनि
रामकथा कलि कलुष विभंजनि ॥ '[१९]

रामकथा से तुलसी के व्याकुल मन को जीवन की उमंग मिली, जीवन संघर्ष की प्रेरणा मिली। तुलसी को रामकथा और अपने युग परिस्थितियों में घनिष्ठ संबंध जान पडा। इन सब बातों ने तुलसी को पौरूष की ओर उन्मुख किया। इसलिए वे एक ऐसे स्वामीकी शरण में चले गये जो असत् का विध्वंसक और सर्व शक्तिमान था जिनके यहाँ तुलसी और उनके युग को शांति मिली थी। श्री राम नरेश त्रिपाठी ने इसके बारे में लिखा है - ' उस दीन हीन अनाथ मनुष्य ने जागृत अवस्था में एक स्वप्न देखा। उसने उस स्वप्न को आदर्श पुरूष-स्त्री आदर्श समाज और सुराज के रूप में चित्रित किया।'[२०]

<u>दास्य भक्ति की प्रेरणा</u> -

तुलसीदासजी के व्यक्तित्व की और एक विशेषता है और वह है उनकी दास्यवृत्ति। उनके दास्य भक्ति को अपनाने का कारण यही है कि जीवन के आरंभ में उन्हें अनाथ होने का कटु अनुभव था। माँ-बाप, सगे

संबंधी सभी ने उस बालक का तिरस्कार किया था । यही तिरस्कार तुलसी के सभी दु:खों के मूल में था । अत: सब से अधिक प्रबल इच्छा संरक्षण पाने की थी और राम से अच्छा संरक्षक उन्हें और कोई नहीं मिल सकता था ।

भक्त रूप में तुलसी -

तुलसी के काव्य में उनके व्यक्तित्व का भक्त रूप सर्वाधिक दिखाई देता है । उनका व्यक्तित्व राम के प्रति समर्पित है । तुलसी अनन्यभाव के भक्त हैं । आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों मे - " अत्यन्त विनम्र भाव, सच्ची अनुभूति के साथ अपने आराध्य पर अटूट विश्वास उनके व्यक्तित्व के प्रधान तत्व हैं । "[२१] तुलसी को एक मात्र राम पर ही भरोसा है -

" एक भरोसा एक बल एक आस विस्वास ।
एक राम घनस्याम हित चातक तुलसीदास ।। "[२२]

तुलसी की रामभक्ति उनकी समस्त कामनाओं को पूर्ण कर देने वाली है । उनके समस्त रिश्ते-नाते तो राम से हैं । उनकी भक्ति में आत्मकल्याण के साथ लोककल्याण भी है । वे सरलचित और जग का हित करनेवाले भक्त हैं ।

समन्वयवादी तुलसी -

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों मे - " तुलसी समन्वयवादी थे । - उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है । लोक और शास्त्र का समन्वय, गार्हस्थ्य और वैराग्य का समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय, भाषा और संस्कृत का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय, कथा और तत्वज्ञान का समन्वय, ब्राह्मण और चाण्डाल का समन्वय, पाण्डित्य और अपाण्डित्य का समन्वय । "[२३]

युगद्रष्टा तुलसी -

युग की नाडी को पहचानकर उसके अनुसार दवा देकर व्याधि-मुक्त करके समाज को नवीन स्वरूप देनेवाला युगप्रवर्तक व्यक्ति ही लोकनायक और युगद्रष्टा कहलाने का अधिकारी है। तुलसी ऐसे ही युगद्रष्टा थे। उन्होंने अपनी भक्ति के द्वारा पथभ्रष्ट समाज को यह उपदेश दिया। वे अपने युग के मार्गदर्शक तो थे ही और भविष्य के भी मार्गदर्शक बन गये।

तुलसी के स्वभाव और चरित्र के बारे में डॉ. रामदत्त भरद्वाज कहते हैं - " तुलसी दयालु और परोपकारी, मृदुल, श्रध्दालु, निष्ठावान, विनयशील, भावुक आत्मपरीक्षक, समन्वयकारी, गुणग्राही, तीव्रालोचक प्रकृति प्रेमी, आदर्शवादी, स्पष्टवादी, निर्भीक, अगाध पण्डित, दृढ संकल्पी और प्रतिभाशाली है। "[२४]

डॉ. शम्भुलाल के शब्दों में - " तुलसीदास के व्यक्तित्व में आशा, विश्वास भरा हुआ है और उन्होंने जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में विष को अमृत में बदलने का प्रयास किया है।"[२५]

तुलसीदास के जीवन की सांध्य बेला आ गयी। वे बाहु की पीडा से व्यथित हो उठे। उनकी इस बाहु पीडा का वर्णन " हनुमान बाहुक " में देखने को मिलता है -

" पायें पीर पेटपीर बाहं पीर मुंहपीर
जर्जर सकल सरीर पीर मई है। "[२६]

इसप्रकार " हनुमान बाहुक " के अंतिम पचीस छंदों में तुलसी की पीडित आत्मा की कराह हमें सुनाई पडती है। तुलसी की आत्मा श्रीराम के स्वरूप में विलीन हो गई। उन्होंने जीव को भवसागर से पार उतारने के लिए सगुण रूप राम नाम की नौका देकर वे स्वयं भी पार उतर गये।

तुलसी की साहित्य कृतियों का परिचय :

हिन्दी साहित्य की मध्ययुगीन काव्यधारा में तुलसीदास की कृतियाँ सर्वथा अनुपमेय हैं। इनकी रचना में हमें जीवन की आध्यात्मिक साधना का स्वर और रामभक्ति की तन्मयता की ध्वनियाँ सुनाई देती है। इनकी अमर कृतियाँ हिन्दी साहित्य के लिए युग-युग तक जन हृदय को गंगा के समान पवित्र करेगी।

तुलसीदासजी की रचना शिवसिंह सरोज ने १८ बतलाई है। बंगवासी तुलसी ग्रंथावली के आधारपर इनकी रचनाएँ ६० हैं। मिश्र बन्धुओं ने वह २५ बतलाई है। अनेक विद्वानों ने उनकी १२ कृतियाँ प्रामाणिक मानी हैं। वे इसप्रकार हैं -

१) रामलला नहछू
२) वैराग्य संदीपनी
३) बरवै रामायण
४) पार्वती मंगल
५) जानकी मंगल
६) रामाज्ञा प्रश्न
७) दोहावली
८) कवितावली
९) गीतावली
१०) श्रीकृष्ण गीतावली
११) विनय पत्रिका
१२) रामचरितमानस

१) रामलला नहछू -

तुलसीदास की यह प्रारंभिक रचना है। इस रचना में हमारी संस्कृति के अनुकूल लोक प्रचलित रसिकता के प्रवाह का यथार्थ चित्रण तुलसी ने किया है। यह रचना अवधी में है। इसमें अयोध्या की झाँकी हमें

देखने को मिलती है। तुलसी ने नहछू गीतों में ऐश्वर्यमयी गंभीरता भरकर इसके सोहर छंद को जीवित बनाया है।

` जेहि गाइय सिधि होय, परमनिधि पाइय हो ।
कोटि जनम कर पातक दूरि सो जाइय हो । `[२७]

यह रचना साधारण होते हुए भी अपना अलग स्थान रखती है।

२) <u>वैराग्य संदीपनी</u> -

यह तुलसीदास की छोटी रचना है। इस रचना में सदाचार, सत्संग, वैराग्य आदि के द्वारा भक्ति प्राप्त करने का मार्ग बताया है। इसे चार मार्गों में विभाजित किया है - वंदना, सन्तस्वभाव वर्णन, संत महिमा वर्णन, शांति वर्णन। इसमें तुलसीदास की यह विशेषता रही है कि उनके सगुण और साकार राम वही है जो निर्गुण निराकार अव्यक्त और अरूप है।

` वैराग्य संदीपनी ` अपने आप में पूर्ण ग्रन्थ है। इसमें अनेक स्थलों पर तुलसी का नाम आया है। फिर भी बहुत से विद्वान इस ग्रन्थ को तुलसीकृत मानने में संदेह करते हैं। लेकिन कई दोहे तुलसी की अन्य कृतियों में ज्यों के त्यों मिलते हैं। इसलिए यह रचना तुलसी की मानी जाती है।

३) <u>बरवै रामायण</u> -

तुलसीदासजी ने इस रचना में बरवै छन्दों में रामकथा कही है। वस्तुत: यह बरवै छन्दों का संकलन है। इसकी रचना सं. १६६९ में की गयी है। इसमें राम और सीता के सौन्दर्य का अनुपम वर्णन हुआ है। यह अवधी में लिखी हुअी रचना है।

` बसे रामायण ` एक साहित्यिक रचना है। इसमें शृंगार भावना की प्रधानता है साथ ही इसमें अनेक अलंकारों का समावेश हुआ है।

४) पार्वती मंगल -

गोस्वामी तुलसीदासजी ने नारी शक्ति को अपने गौरव से परिचित कराने के लिये ` पार्वती-मंगल ` की रचना की हैं। इस कथा का आधार ` कुमार संभव ` है। इसमें पार्वती की कथा संक्षेप में बताकर उनकी तपस्या और विवाह का वर्णन विस्तार पूर्वक किया है।

५) जानकी मंगल -

इसके नामकरण से ही स्पष्ट होता है कि इसमें सीताजी के विवाह का वर्णन किया गया है। पार्वती मंगल और जानकी मंगल के उद्देश्य और शैली में साध्य दिखाई देता है। ` पार्वती मंगल ` से ` जानकी मंगल ` यह रचना अधिक बडी है। खण्डकाव्य की दृष्टि से यह अत्यन्त सफल है।

६) रामाज्ञा प्रश्न -

इस काव्य की रचना मंगल और शकुन के निर्णय के लिये हुई है। इसमें सात सर्ग हैं। इस रचना में तुलसी की ज्योतिष विद्या का अनुपम चमत्कार दिखायी देता है। ` रामाज्ञा प्रश्न ` कवि की व्यावहारिक ज्ञान गरिमा का काव्यग्रंथ है।

७) दोहावली -

इसमें गोस्वामी तुलसीदास के दोहों का संग्रह है। ` दोहावली ` शुध्द मुक्तक रचना है। इस रचना का प्रमुख उद्देश्य नीति-निरूपण है, परन्तु समाज, धर्म दर्शन, व्यक्ति एवं राजनीति के प्रमुख तथ्यों का भी

इसमें विस्तार पूर्वक विश्लेषण किया गया है। इस काव्य में व्यक्ति के आचार और नीति सम्बन्धी दोहे बडे ही सशक्त और चुटील हैं। इसमें राजनीति का आदर्श प्रकट किया गया है। दोहावली विविध ज्ञान का भंडार है।

८) कवितावली -

गोस्वामी तुलसीदासजी की प्रमुख रचनाओं में इसका विशिष्ट स्थान है। इसमें अनेक कविता, सवैयों का संग्रह है। इसमें राम के पावन चरित्र का चित्रण किया गया है। ` कवितावली ` की कथा ` रामचरित-मानस ` की ही कथा है, लेकिन ` रामचरितमानस ` जैसा विस्तार और विकास नहीं है। इसमें पाँच विशेषतायें हमें दिखाई देती हैं - १) रामके बालरूप का वर्णन, २) राम और सीता के प्रेम का वर्णन, ३) हनुमानजीकी वीरता का वर्णन, ४) कलियुग की निन्दा, ५) आत्मचरित।

यह रचना अत्यन्त प्रौढ है। यह मुक्तक काव्य है। ` कवितावली ` सरस, मधुर और ओजपूर्ण छन्दों से भरपूर है। इसके अनेक ललित छन्द बडे प्रसिध्द हैं। बालकांड से लंकाकाण्ड तक राम के जीवन से सम्बन्ध रखनेवाले विविध दृश्यों की सुन्दर रचना की गयी है। उत्तरकाण्ड में कलियुग की दशा का वर्णन बडा ही मार्मिक है जो समकालीन जनता की दशा का यथार्थ चित्र उपस्थित करता है। जैसे -

` खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि,
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी। `[२८]

अकाल के समय उठनेवाली त्राही-त्राही और हाहाकार का स्वर भी ` कवितावली ` में गूंजता है। यह ग्रंथ अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

९) विनय पत्रिका -

तुलसीदास की प्रमुख रचनाओं में ` विनय पत्रिका ` महत्वपूर्ण ग्रंथ है । ` रामचरितमानस ` के समान यह अत्यन्त प्रसिध्द ग्रंथ है । ब्रजभाषा के सम्पूर्ण साहित्य में यह रचना अद्वितीय है । इसका उद्देश्य विश्व मंगल की भावना से परिपूर्ण है । राममक्त गोस्वामीजी कलियुग से त्रस्त होकर राम के दरबार में अपनी पत्रिका प्रेषित करते हैं ।

यह मूल रूप से भक्ति का ही ग्रंथ है । इसमें भक्ति के असंख्य भाव, दैन्य, विश्वास, दृढता, हर्ष, पुलक, मोह, चिन्ता, विषाद, प्रेम आदि का सुन्दर वर्णन मिलता है । तुलसीदास की राममक्ति पर दृढ आस्था निम्नांकित पद में देखने को मिलती है -

` नाहिन आवत आन मरोसो
यहि कलिकाल सकल साधन तरु है प्रेम फलनि फरोसो ।।`[२९]

इसप्रकार ` विनय पत्रिका ` एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है । इसमें तुलसीदास का कवि रूप अपेक्षाकृत सामने आया है । उनका भाषा पर कितना अधिकार है यह भी स्पष्ट हो जाता है । इस अलंकार और अभिव्यक्ति कौशल की दृष्टि से ` विनय पत्रिका ` उत्तम ग्रंथ है ।

१०) गीतावली -

तुलसीदासजी की यह रचना गीतों में लिखी हुई अनुपम कृती है । कथानक की दृष्टि से ` रामचरितमानस` से यह भिन्न है । इसमें कथानक की स्वतंत्रता है । ` गीतावली ` एक ऐसी रचना है जिसमें सांस्कृतिक एवं कोमल स्त्री सुलभ भावनाओं का वर्णन महिला समाज के लिए ही किया गया है ।

` गीतावली ` का प्रमुख आकर्षण कथानक नहीं, वरन भाव सम्पाति है। इसमें शृंगार, हास्य, वीर और करुण के चित्रण बहुत ही सुंदर है। कौशल्या और दशरथ के प्रसंगों में संयोग और वियोग दोनों ही पक्ष अत्यन्त सशक्त दिखायी देते है। वात्सल्य वियोग की उन्माद दशा का एक निम्न चित्रण इस ग्रंथ की भाग गम्भीरता को स्पष्ट कर देता है - कौशल्या कह रही है -

` माई री ! मोहि कोउ न समुझावै
राम गगम साँयो किधौं सपनों में मन परतीति न आवे ।। `[30]

११) श्रीकृष्ण गीतावली -

` श्रीकृष्ण गीतावली ` यह अत्याधिक प्रौढ कृती है। इसमें गीत-शैली के माध्यम से कृष्ण-चरित्र की अद्भुत भाव-योजना की गई है। बोलचाल की सजीव मुहावरेदार ब्रजभाषा का इसमें प्रयोग किया गया है। ऐसा जान पडता है कि कृष्ण स्वयं हमारे सामने खडे है। इसमें कथा प्रसंग नही है, तथापि यह तुलसी की अर्त्यंत प्रौढ साहित्यिक कृति है। इस प्रकार ` कृष्ण गीतावली ` समस्त कृष्ण-काव्यधारा का प्रतिनिधित्व करने में सफल हुई है।

१२) रामचरितमानस -

` रामचरितमानस ` तुलसीदासजी का सर्वोत्कृष्ठ ग्रंथ है। यह हमारी भारतीय संस्कृति महाकाव्य है। इस ग्रंथ के कारण ही तुलसीदासजी का गौरव बढा है। इसकी रचना सं. १६३१ में हुआी है। यह रचना सात काण्डों में विभक्त है। फिर भी कथा का विस्तार इतना है कि महाकाव्य के ८ सर्गों से अत्याधिक है। रामचरितमानस यह एक प्रौढ रचना है। यह

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

हिन्दी साहित्य का सर्वोत्कृष्ठ महाकाव्य है। एक ओर तो इसमें तुलसीदास के भक्तिभावों की उत्कृष्ठता है और दुसरी ओर कवित्व की अपूर्व शक्ति। इसमें हमें मर्यादा पुरूषोत्तम राम के व्यक्तित्व में नर और नारायण का समन्वित रूप दिखाई देता है। इसमें अश्लीलता का स्पर्श कहीं भी नहीं मिलता सर्वत्र मर्यादा का ध्यान रखा गया है। और ऐसे पात्रों को प्रस्तुत किया गया है, जो नैतिक आदर्शों के ज्वलंत उदाहरण हैं। इसमें तुलसी का मुख्य उद्देश्य भक्तिमार्ग का प्रतिपादन है। परन्तु वे यह नहीं मानते कि आदर्श भक्त वह है जो भावुकता के आवेश में सामाजिक कर्तव्यों की तिलांजलि देता है अथवा स्वयं को नैतिकता के बंधनों से परे मानता है, लेकिन नैतिकता ही उनकी भक्ति का आधार है। तुलसीदास निरंतर अपने पाठकों को इसका स्मरण दिलाते हैं -

अनुसुया सीता से कहती है -

` सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिव्रत करहि।
तोहि प्रानप्रिय राम कहिऊँ कथा संसार हित ।। `[३१]

` रामचरितमानस ` का साहित्यिक दृष्टि से बहुत ही महत्व है। इसमें राम की संपूर्ण जीवन गाथा छन्दो बध्द हुअी है। यह ग्रंथ अवधि में लिखा है। यह बोलचाल की अवधि में न होकर साहित्यिक अवधि में हैं। इसमें रस और अलंकार का भी बहुत ही सुंदर प्रयोग हुआ है। इसप्रकार ` रामचरित मानस ` के आधुनिक भारतीय भाषाओं के समस्त साहित्य मेंर जितनी लोकप्रियता मिली है, उतनी किसी अन्य रचना को नहीं। यह रचना भारतीय साहित्य की ही नहीं विश्व साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान पाने की अधिकारिणी हुई है।

तुलसीदासजी के साहित्य के बारेमें आचार्य रामचंद्र शुक्ल कहते है कि - ` उनकी साहित्य मर्मज्ञता, भावुकता और गम्भीरता के सम्बन्ध में इतना जान लेना आवश्यक है कि उन्होंने रचनानैपुण्य का भव्य प्रदर्शन कही नहीं किया और न शब्द चमत्कार आदि के खिलवाड़ों में वे फँसे हैं। `३२

निष्कर्ष :

तुलसीदासजी की सभी कृतियों को देखने से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि वे एक बहुमुखी काव्यप्रतिभा के कलाकार थे। उनका ` रामचरितमानस ` संसार के सर्वश्रेष्ठ महाकाव्यों में गिना जाता है। ` जानकीमंगल ` और ` पार्वतीमंगल ` सरस खण्डकाव्य हैं। उनकी ` विनयपत्रिका ` गीति काव्य का एक परमोत्कृष्ठ उदाहरण है। उनकी ` गीतावली ` और ` कृष्णगीतावली ` में भी गीतों का अच्छा संग्रह हुआ है। ` कवितावली ` मुक्तककाव्य रचना है। तुलसीदासजी के समय मध्यदेश में अवधी और ब्रजभाषामें काव्य-रचना हो रही थी - तुलसीदास ने दोनों को अपने काव्य का आधार बनाया है।

लेकिन तुलसीदास कोरे कवि नहीं थे, वे भक्त के साथ कवि थे। इसलिए उनकी रचनाओं में रामभक्ति ने व्यावहारिक आदर्शवाद को हमारे सामने रखा है। उनके ` राम ` वास्तविक अर्थ में मर्यादा पुरूषोत्तम हैं और मर्यादा पुरूषोत्तम की कल्पना इनके सिवा और किसीने भी नहीं की। उनकी रामभक्ति मानवता के हितपर आधारित है और यही कारण है कि उनका समस्त कार्य रामभक्ति के साथ मानवता का उच्चतम आदर्श है।

इसप्रकार तुलसीदासजी ने सभी कृतियोंमें रामभक्ति की महिमा गाई है। उन्होंने इनकी रचना ` स्वात: सुखाय ` की थी, लेकिन यह ` बहुजन हिताय ` और ` बहुजन सुखाय ` बन गयी।

संदर्भ सूची

१. हिंदी साहित्य की भूमिका
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
राजकमल प्रकाशन पटना, द्वितीय संस्करण १९६९
पृष्ठ ८७

२. तुलसीदास व्यक्ति और रचना संदर्भ
डॉ. भगवती प्रसाद सिंह
राजकमल प्रकाशन दिल्ली सं. १९७५
पृष्ठ १

३. रामचरितमानस की भूमिका
डॉ. रामदास गौड
हिन्दी पुस्तक एजन्सी माला काशी, सं.१९७०
पृष्ठ ४५

४. मानस मर्यंक
शिवलाल पाठक
खड्गविलास प्रेस बाँकीपुर, १९२०
दोहा सं. १३५

५. मूल गोसाईं चरित
दोहा २
बाबा वेणीमाधवदास
कल्याण प्रेस गोरखपुर

६. तुलसी ग्रंथावली (भाग ३)
पंडीत रामगुलाम द्विवेदी, रामचंद्रशुक्ल
नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी प्रथम संस्करण सं. २०३१

७. तुलसीदास
डॉ. माताप्रसाद गुप्त
हिंदी परिषद प्रकाशन प्रयोग, विश्वविद्यालय प्रयोग, १९७२ प्रथम
पृष्ठ १११

८. तुलसीदास जीवनी और विचारधारा
डॉ. राजाराम रस्तोगी
अनुसंधान प्रकाशन, आचार्य नगर कानपुर
पृष्ठ ९६

९. हिंदी साहित्य का इतिहास
डॉ. रामचंद्र शुक्ल
नागरी प्रचारिणी सभा काशी २००६ संवत
पृष्ठ १५४

१०. तुलसी
राम बहोरी शुक्ल
हिंदी भवन जालंधर संस्करण १९५२
पृष्ठ १०

११. तुलसीदास और उनका काव्य
डॉ. माताप्रसाद गुप्त
हिंदी परिषद प्रकाशन प्रयोग, विश्वविद्यालय प्रयोग
पृष्ठ ६०

१२. तुलसीदास जीवनी और विचारधारा
डॉ. राजाराम रस्तोगी
अनुसन्धान प्रकाशन आचार्य नगर कानपुर
पृष्ठ ११४

१३. विनयपत्रिका
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीता प्रेस गोरखपुर

१४. कवितावली
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीताप्रेस गोरखपुर १३ वा संस्करण २०३० संवत
पद १००

१५. रामचरितमानस (१-३१,३२)
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीताप्रेस, गोरखपुर ४३ वा संस्करण २०४१ संवत

१६. वही,
१।५

१७. मूल गोसाईं चरित
वैणीमाधव दास
कल्याण प्रेस गोरखपुर
दो. ११९

१८. रामचरितमानस
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीताप्रेस गोरखपुर ४३ वा संस्करण संवत २०४१
१ । ३०

१९. वही
१ । ३०,३

२०. तुलसी और उनका काव्य
राम नरेश त्रिपाठी
राजपाल प्रकाशन दिल्ली १९५१
पृष्ठ १

२१. हिंदी साहित्य
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
अत्तर चन्द कपूर अण्ड सन्स दिल्ली संस्करण १९५२
पृष्ठ २२६.

२२. दोहावली
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीताप्रेस गोरखपुर २० संस्करण २०३१ सं.
दो. २७७

२३. हिन्दी साहित्य की भूमिका
हजारी प्रसाद द्विवेदी
राजकमल प्रकाशन पटना, द्वितीय संस्करण १९६९
पृष्ठ ८५

२४. गोस्वामी व्यक्तित्व दर्शनसाहित्य
डॉ. रामदास भारद्वाज
भारती साहित्य मंदिर दिल्ली संस्करण १९६२

२५. तुलसी का शिक्षा दर्शन
डॉ शम्भुलाल शर्मा
आशुतोष पुस्तकायन फलोदी, राजस्थान १९६२

२६. हनुमान बाहुक
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीता प्रेस गोरखपुर

२७. तुलसी ग्रंथावली (भाग २)
रामचंद्र शुक्ल
नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

२८. कवितावली
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीता प्रेस गोरखपुर
पद ९७

२९. विनय पत्रिका
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीता प्रेस गोरखपुर
पद १७३

३०. गीतावली
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीताप्रेस गोरखपुर
दो. ५३

३१. रामचरितमानस
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीताप्रेस गोरखपुर ४३ वा संस्करण २०४१ संवत

३२. हिंदी साहित्य का इतिहास
डॉ. रामचंद्र शुक्ल
नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी